"बना दो ये जीवन महापुरुषों जैसा"

लेते ही ब्रह्मज्ञान,
आप जब मुझे कहने लगे,
संत ! महात्मा ! महापुरुष !
सोचा मैने,
परखा मैने,
जाँचा खुद को,एक दिन,संतों की कसौटी पर,
करके तुलना,
संतों,महात्माओ,फकीरों से
तो पाया,खुद को ज़ीरो ।
क्योंकि, "संत स्वभाव छुआ छल नाहीं"
होते हैं संत
शांत,धीर,गम्भीर,सहनशील,सत्यवादी और विश्वासी
अपने आराध्यदेव के पुजारी ।
मुझसे तो मेल नहीं खाते हैं
इनके 'गुण-धर्म' ।
क्योंकि, मैं तो अभी तक "मैं ही हूँ "
छोड़ नहीं पाया अपने विकारों को
कथनी और करनी मेरे मेल नहीं खाते हैं ।
करता हूँ अभिनय,सिर्फ संगतों में
संत,महात्मा,महापुरुष होने का ।
लेकिन अपने अंदर के विकारों को,
बदल नहीं पाता हूँ
काम,क्रोध,लोभ,मोह,मत्सर,अभिमान का
करता हूँ मैं,खुल्लम-खुल्ला इस्तेमाल
इसीलिए मुझे आती है,कभी-कभी,
स्वयम पर लज्जा भी,
झुक जाता है सिर शर्मिंदगी से
आप संतों,महापुरुषों के आगे ।
लेकिन,एक खास बात और
जब इतिहास के उन पन्नों पर

पड़ती है नज़र मेरी
जिसमें, मेरे जैसे असंख्य असंतों को,
अपनी एक कृपा दृष्टि से
बनाया है तूने 'महान संत'
जो अपनी तमाम विकारों के साथ भी
आ गये तेरी शरण ।
तेरी इसी दयालुता का
करके एहसास,
करता है, याचना "राज" बार-बार
"हे महात्मा, हे महापुरुष
हे सतगुरु, हे निरंकार प्रभु ।"
जब ले ही लिये हो,
अपनी शरण में
तो करदो प्रभु,यह भरपूर बख्शिश
सारे विकारों का हो खात्मा
बना दो ये जीवन,खुद स्वयम जैसा
संतों,महात्माओ,महापुरुषों जैसा ।

राजबली सिंह